स्वागत भाषण *

दुव्वुरी सुब्बाराव

भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से प्रो. अभिजीत बनर्जी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। प्रो. बनर्जी कुछ ही देर बाद प्रोफेसर सुरेश तेंडुलकर स्मारक व्याख्यान श्रृंखला का प्रथम व्याख्यान हमारे समझ देने जा रहे हैं। श्रीमती सुनेत्रा तेंदुलकर और स्वर्गीय प्रो. तेंडुलकर के अन्य पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति भी मेरे लिए बहुत हर्ष का विषय है। आप लोगों की उपस्थिति हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस व्याख्यान में सभी प्रसिद्ध आमंत्रित लोगों का भी हार्दिक स्वागत है।

प्रो. एस.डी. तेंडुलकर

2. प्रो. सुरेश तेंडुलकर सभी दृष्टिकोणों से भारत के प्रमुख अर्थशास्त्री थे जो शिक्षा और सरकारी नीति जगत -दोनों में बहुत सम्मानित व्यक्ति थे। उनकी विद्वता अर्थशास्त्र के सभी उप-क्षेत्रों में विस्तारित थी किंतु उनका प्रमुख कार्य भारत में जीवन स्तर की माप करना और उसका विश्लेषण करना था जिसका केंद्र बिंदु असमानता और गरीबी थे। सरकारी नीति निर्माण के क्षेत्र में उनका यह कार्य स्थायी धरोहर के रूप में रहेगा।

3. उनके शैक्षिक कार्य में यह विषय प्रमुख रहा है और जिस शिद्दत से उन्होंने इसे अंजाम दिया उससे प्रो. तेंडुलकर की दो प्रमुख विशेषताओं का पता चलता है। प्रथम विशेषता थी गरीबी के प्रति उनकी चिर संवेदनशीलता और उनका यह विश्वास कि गरीबी विरोधी कार्यक्रमों की रूपरेखा और अनुपालन में गरीबी की प्रकृति और गरीबों की सामाजिक अवस्था की जानकारी शामिल की जानी चाहिए। दूसरी विशेषता अनुभववाद के प्रति उनकी श्रद्धा थी। उनकी श्रद्धा किंवदंतियों पर आधारित व्यापक सामान्यीकरण पर नहीं थी। उनका मानना था कि ज्ञान और बौद्धिकता का एक मात्र रास्ता आंकड़ों पर आधारित होता है। उनका यह मानना था कि सरकारी नीति का आधार अनुसंधान के परिणाम होने चाहिए जो कि विश्वसनीय आंकड़ों के सावधानी पूर्वक विश्लेषण से प्राप्त किए जाएं।

4. गरीबी के प्रति गहरी संवेदनशीलता और गरीबी को समझने के लिए आंकड़ों पर आधारित अनुसंधान की प्रतिबद्धता की उन दोनों विशेषताओं ने प्रो. तेंडुलकर की शिक्षा और पेशे की दिशा निर्धारित की है। उनका शैक्षिक रिकार्ड अर्थशास्त्र के किसी भी विद्यार्थी को प्रभावित कर सकता है। 1962 में दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से मास्टर की उपाधि में वे कक्षा में प्रथम रहे। उसके बाद प्रो. तेंडुलकर ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से डॉक्ट्रेट किया जहां पर प्रोफेसर हेंड्रिक हाउथाक्कर और हॉल्लिस चेनेरी जैसे बड़े विद्यान उनके शोध कार्य में सलाहकार रहे। भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) से जुड़ने के लिए वह भारत लौटे। उसके बाद वह विश्व बैंक के विकास अनुसंधान केंद्र में प्रतिष्ठित द्वि-वर्षीय दायित्व से जुड़ गए। 1978 के बाद के उनके अमूमन पूरे पेशे में वह दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से जुड़े रहे जहां पर उन्होंने पहले प्रोफेसर के रूप में और उसके बाद अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष के रूप में तथा अंत में स्कूल के निदेशक के रूप में विशिष्ट कार्य किया। 2000 से 2004 में उनकी सेवानिवृत्ति तक प्रोफेसर तेंडुलकर ने दिल्ली स्कूल के आर्थिक विकास केंद्र में कार्यपालक निदेशक के रूप में सेवाएं दीं।

5. आंकड़ों की गुणवत्ता के संबंध में प्रो. तेंडुलकर के सरोकार के कारण वे लगातार सार्वजनिक कार्य के माध्यम से आर्थिक आंकड़े तैयार करने की प्रक्रिया से जीवन भर जुड़े रहे। उन्होंने राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षणों के अनेक कार्यों में सेवाएं प्रदान कीं। वे राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) की प्रशासनिक समिति, राष्ट्रीय लेखा सलाहकार समिति तथा राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के अध्यक्ष रहे।

6. यह बात सहजता से समझी जा सकती है कि अनुभवजन्य अनुसंधान के बार में प्रो. तेंडुलकर की प्रतिबद्धता और गरीबी के प्रति उनकी संवेदनशीलता के कारण उन्होंने भारत में गरीबी के अनुमान के कार्य में बहुत विस्तृत और प्रभावशाली कार्य किया। वे गरीबी के अनुमान से संबंधित 1993 की लकड़ावाला समिति के सदस्य रहे। इस समिति ने अन्य बातों के अलावा गरीबी के अनुमान के लिए राज्य विशेष के उपभोग के हिस्से (बास्केट) का पता लगाने की अनुशंसा की। जोरदार राष्ट्रीय बहस का विषय रहने वाली हाल ही की तेंडुलकर समिति रिपोर्ट ने इन मानकों में संशोधन किया और शहरी गरीबी की ही तरह ग्रामीण गरीबी के अनुमान व्यक्त करने के संबंध में अनुशंसा करके उसमें सुधार किया।

---

* 19 जनवरी 2013 को कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे में आयोजित किए गए प्रो. तेंडुलकर स्मारक प्रथम व्याख्यान में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव के स्वागत वचन।

7. प्रो. तेंडुलकर के बारे में उनके विद्यार्थियों और सहकर्मियों से लंबे समय से प्रशंसा सुनने के बाद भी मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य अपने पेशे के उत्तरार्द्ध में तभी मिला जब वे प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार समिति के सदस्य थे और मैं उस समिति का सचिव था। बाद में वे इस समिति के अध्यक्ष बने और उन्होंने महत्त्वपूर्ण नीतिगत मामलों में प्रधानमंत्री को परामर्श दिया।

8. 2008 में रिज़र्व बैंक में आ जाने से प्रोफेसर तेंडुलकर से मेरा जुड़ाव जारी रहा। प्रो. तेंडुलकर केंद्रीय बोर्ड के निदेशक थे और 2006-11 के दौरान वे रिज़र्व बैंक के पूर्वी क्षेत्रीय स्थानीय बोर्ड के अध्यक्ष रहे। रिज़र्व बैंक उनसे इस जुड़ाव को अपना सौभाग्य मानता है और बैंक उनके बुद्धिमत्तापूर्ण परामर्शों और परिपक्व मार्गदर्शन से बहुत लाभान्वित हुआ।

9. जून 2011 में उनके आकस्मिक निधन से उनके हजारों विद्यार्थियों, सहकर्मियों और शुभचिंतकों की ही तरह रिज़र्व बैंक में हम भी बहुत दुखी हुए। हम उन्हें एक बेहतरीन अर्थशास्त्री के रूप में याद करते हैं जिनकी पहचान उनकी बौद्धिक सत्यनिष्ठा, तथा उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण रूप से बढ़िया व्यक्ति के रूप में है जिनमें शांति प्रदान करने वाली सहजता और मन को भाने वाली नम्रता थी।

10. प्रो. तेंडुलकर, अर्थशास्त्रीय पेशे में उनके योगदान और रिज़र्व बैंक से उनके जुड़ाव की स्मृति को सम्मानित करने के लिए रिज़र्व बैंक ने इस व्याख्यान को प्रारंभ करने का निर्णय लिया है। रिज़र्व बैंक द्वारा प्रारंभ किए गए अन्य स्मारक व्याख्यानों का आयोजन सिर्फ मुंबई में होता है किंतु तेंडुलकर स्मारक व्याख्यान का आयोजन भारतीय रिज़र्व बैंक के कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे में किया जाएगा। पुणे प्रो. तेंडुलकर का मूल निवास स्थान था। यह व्याख्यान विकास अर्थव्यवस्था के विषय को समर्पित होगा।

प्रो. अभिजीत बनर्जी

11. हमारा सौभाग्य है कि तेंडुलकर स्मारक व्याख्यान का प्रारंभिक व्याख्यान, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी जैसे अर्थशास्त्री द्वारा आज दिया जाने वाला है। प्रो. बनर्जी वास्तविक धरातल पर अनुसंधान के आधार पर गरीबी को समझने में प्रो. तेंडुलकर के जुनून में साथी रहे हैं। प्रोफसर बनर्जी की विद्वता बहुत गंभीर और विस्तृत है किंतु हम में से अधिकांश लोग उन्हें उनकी पुस्तक - पुअर इकोनॉमिक्स - के माध्यम से जानते हैं जिसका लेखन उन्होंने 2011 में इस्थर डुल्फो के साथ में किया है।

12. *पुअर इकोनॉमिक्स* से गरीबों के जीवन और उनके द्वारा प्रकट रूप से लिए जाने वाले अतार्किक निर्णयों के बारे में नई वास्तविक जानकारी मिलती है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें गरीबी की प्रकृति के बारे में सामान्यीकरण और जानकारी के अभाव में व्यक्त अनुमानों से परहेज किया गया है। प्रत्यक्ष रूप से यह जानने के लिए कि गरीब किस प्रकार से जीवन यापन करते हैं और वे दैनिक जीवन से जुड़े मामलों में किस प्रकार से निर्णय लेते हैं, बनर्जी और डुल्फो ने बहुत से देशों की यात्रा की और वस्तुतः उनसे जुड़ गए। पुस्तक में यह संदेश निहित है कि गरीबी कम करने के बारे में कोई बड़ा सार्वत्रिक सिद्धांत नहीं है। इस लड़ाई को बहुत से मोर्चों पर लड़ा जाना है। एक उपाय जो किसी स्थान पर कारगर होता है जरूरी नहीं कि वह दूसरे स्थान पर भी कारगर हो। आगे का रास्ता गरीब लोगों के व्यवहार के आकस्मिक संबंध को समझने के वास्तविक धरातल पर प्रयोगों तथा कार्य करते हुए सीखने में निहित है।

13. प्रो. बनर्जी वर्तमान में द मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, फोर्ड फाउंडेशन इंटरनेशनल में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर हैं। चिकित्सा अनुसंधान की तरह ही गरीबी निरोधी कार्यक्रमों के अध्ययन के लिए बेतरतीब प्रयोगों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 2003 में उन्होंने अब्दुल लतीफ जमील पॉवर्टी एक्सन लैब (जे-पीएएल) की स्थापना की। प्रो. बनर्जी और उनके साथियों का लक्ष्य आसान है किंतु यह उग्र सुधारवादी है। वे विकास के लिए प्राप्त सहायता की पूरी जांच करके मरम्मत करना चाहते हैं ताकि इनका व्यय उन कार्यक्रमों में किया जा जाए जो वास्तव में परिवर्तन ला सकें। जे-पीएएल को 2009 में विकास सहयोग श्रेणी का बीबीवीए फाउंडेशन का ञ्फ्रंटियर ऑफ नॉलेजट पुरस्कार प्राप्त हुआ।

14. प्रोफेसर बनर्जी का अकादमिक कार्य उल्लेखनीय रहा है। उन्होंने अर्थशास्त्र की पढ़ाई प्रेसिडेंसी कॉलेज कलकत्ता से और बाद में जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय दिल्ली से किया। उन्होंने पी-एच.डी. की उपाधि प्रोफेसर तेंडुलकर की ही तरह हार्वर्ड विश्वविद्यालय से प्राप्त की जिसमें शोध के विषय का शीर्षक 'सूचना अर्थशास्त्र के विषय में निबंध' था। उनके शोध कार्य को बहुत से अकादमिक पुरस्कार प्राप्त हुए जिनको विकास अर्थशास्त्र के फ्रंटियर्स में प्रकाशन के द्वारा व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ है।

गरीबों की पहचान करना

15. प्रो. बनर्जी आज 'गरीबों की पहचान करने' के विषय पर चर्चा करेंगे। यह एक ऐसा विषय है जो भारत में हमारे लिए बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण रहा है और यह राजनीतिक दृष्टि से विवादपूर्ण रहा है। फिर भी गरीबी मापन और उसकी पहचान करना कम से कम तीन कारणों से महत्त्वपूर्ण हैं।

i. पहला, गरीबी की विश्वसनीय माप गरीबों के जीवन स्तर के विषय में नीति निर्माताओं का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक शक्तिशाली उपाय है। इसे दूसरे प्रकार से इस प्रकार से कहा जा सकता है कि सांख्यिकीय रूप से अदृश्य होने पर गरीबों की उपेक्षा करना आसान हो जाता है।

ii. दूसरा, गरीबों की पहचान किए बिना कोई उनको लक्ष्य करके किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। गरीबी के प्रोफाइल का यही उद्देश्य होता है जिससे गरीबी के प्रमुख तथ्यों को व्यक्त किया जाता है और उसके बाद गरीबी के ढंग की जांच की जाती है ताकि यह जाना जा सके कि भौगोलिक और वर्ग के अनुसार इसमें किस प्रकार से परिवर्तन होता है।

iii. तीसरा, गरीबी की माप करने से गरीबी निरोधी कार्यक्रमों के संभावित परिणामों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में और साथ ही संभावित परिणामों की तुलना में वास्तविक परिणामों की तुलना करने में भी मदद मिलती है

गरीबी और रिज़र्व बैंक

16. विकास के लिए अच्छी नीतियां तैयार करने के लिए गरीबी के मापन के महत्त्व को हम सभी जानते हैं किंतु कोई यह तर्कसंगत प्रश्न कर सकता है कि रिज़र्व बैंक अपन पारंपरिक क्षेत्र से बाहर निकलकर गरीबी की पहचान करने और उसके मापन की बात क्यों कर रहा है। मुझे यकीन है कि रिज़र्व बैंक के लिए यह विषय कम से कम दो कारणों से महत्त्वपूर्ण है।

17. पहला, यह सभी जानते हैं कि मुद्रास्फीति का असर अलग-अलग आय वाले वर्गों पर भिन्न प्रकार से होता है। उदाहरण के लिए कम आय आय वाले वर्ग पर, जो अपनी आय का अधिकांश हिस्सा भोजन पर व्यय करता है, उच्च खाद्य स्फीति का अधिक विपरीत असर पड़ता है। दूसरी ओर मांग कमजोर होने से उनके रोजगार के अवसर कम हो सकते हैं। किसी विशेष मौद्रिक रुझान के सकल कल्याणकारी परिणामों की माप करना स्पष्ट रूप से वह कार्य है जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा करने में सक्षम होने की आवश्यकता है ताकि उनकी नीतियों का समग्र रूप से आकलन किया जा सके। पहचान करना इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है जिसे फोकस ग्रुप या पैनल ट्रैकिंग एप्रोच का सहारा दिया जाना चाहिए। अनुसंधान वर्ग ने इस दिशा में कुछ प्रयास किया है। शायद समष्टि आर्थिक नीति परिदृश्य (मैक्रो इकोनॉमिक पॉलिसी डैशबोर्ड) में इस एप्रोच को और अधिक महत्त्व दिए जाने के लिए उपयुक्त समय है।

18. गरीबी की पहचान करने और उसके मापन के संबंध में रिज़र्व बैंक की रुचि होने का दूसरा कारण बैंक की वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता को प्रदान की जाने वाली वरीयता से उत्पन्न होता है। मैं यह अवश्य कहना चाहूंगा कि पिछले पांच वर्षों में हमारी वित्तीय प्रणाली, विशेषरूप से हमारी बैंकिंग प्रणाली ने वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्धता, उत्साह और तत्परता के साथ कार्य किया है। किंतु वित्तीय समावेशन स्वयं एक लक्ष्य नहीं है। यह तो परिवार (हाउसहोल्ड) कल्याण के उच्चतर और अधिक स्थायी स्तर को प्राप्त करने के लिए एक माध्यम मात्र है। इस बात के आकलन के लिए कि क्या यह अधिक मूलभूत लक्ष्य प्राप्त हुआ है अथवा नहीं, हमें समावेशन कार्यक्रमों के परिवार विशेष, विशेषरूप से कम आय वाले परिवार, पर हुए असर को मापने की जरूरत है। पर्यवेक्षण और नियंत्रण प्रणाली के प्रभावी होने के लिए पुनः यहां पर गरीबी की पहचान करना और उसे ढूंढना एक पूर्व-आवश्यकता है।

19. हमारे सभी सामूहिक अनुभवों और विशेषज्ञता के बावजूद एक बात स्पष्ट है कि गरीब और गरीबी के बारे में हमें अपनी समझ में सुधार करने की आवश्यकता है। हमें निरंतर शिक्षा की राह पर ले जाने के लिए प्रोफेसर बनर्जी से बेहतर कौन हो सकता है? देवियो और सज्जनो, आप सभी से अनुरोध है कि पहली बार आयोजित होने वाले इस प्रोफेसर तेंडुलकर स्मारक व्याख्यान में 'गरीबों की पहचान करने' के विषय पर व्याख्यान देने के लिए मेरे साथ प्रोफेसर बनर्जी का स्वागत करें।